[Shri K.N. Balagopal]

The Indian Road Congress has made specifications for rubberized roads on the use of polymer and rubber-modified bitumen in road construction. Based on commercial trials conducted in India and abroad, additional cost for rubberized roads comes to 15-20 per cent compared to bituminous roads, however, it is possible to get about 100 per cent increased service life for rubberized roads. Also, the studies conducted by the Central Road Research Institute, New Delhi, reveal that the cost for periodic maintenance of these roads can be reduced by 35 per cent compared to that of the bituminous roads. Better fuel savings are also possible with rubberisation. Thus, the extra expenditure required for rubberisation is more than compensated.

Hence, it is requested that the Ministry of Road Transport and Highways should initiate necessary steps to promote rubberisation of roads.

Demand to include the role of Muslim heroes in school curriculum for their contribution in the struggle for Indian independence

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, हमारे देश की सुन्दरता यही है कि इसके निर्माण में हमारे सभी धर्मों, भाषाओं तथा प्रान्तों का योगदान रहा है। इसी प्रकार भारत की जंग-ए-आज़ादी का भी इतिहास रहा है, जिसको पढ़ने के बाद पूरी दुनिया हम हिन्दुस्तानियों की मोहब्बत, भाईचारे और राष्ट्रप्रेम को देख कर ईर्ष्या भी करती है और सीखती भी है। मैं भारत की जंग-ए-आजादी के कुछ ऐसे चरित्रों का उल्लेख करना चाहता हूं, जिन्हें पढ़कर आने वाली नस्लों में राष्ट्रवाद और सदभावना का वृक्ष बलवान होगा।

मैं हुकूमत-ए-हिन्द से कहना चाहता हूं कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी जान न्यौछावर करने वाले मोहम्मद अली जौहर थे, जिनका ऐलान था कि गोलमेज़ कॉन्फ्रेंस से या तो मुल्क आज़ाद कराकर लौटूंगा या फिर वहीं जान दे दूंगा और अंततः उन्होंने वहीं गोलमेज़ पर ही अपनी जान दे दी। उनके भाई मोहम्मद शौकत अली जौहर ने सख्त जेल काटी, उनकी मां बी अम्मा के हाथ की सिली टोपी महात्मा गांधी जी ने अपने सर पर लगाई और आज तक वह गांधी कैप कहलाती है। इसी प्रकार बरकत उल्लाह भोपाली थे, जिन्होंने अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री के रूप में बर्तानवी सल्तनत को मानने से इन्कार करते हुए हिन्दुस्तानियों को फिरंगियों के खिलाफ जिहाद पर आमादा किया था। इसी प्रकार वह पहला हिन्दुस्तानी, जिसने फिरंगियों के सीने पर पैर रख कर लाल किले की दीवार पर तिरंगा लहराया, वह कौन था? जिस पर अंग्रेज हुकूमत में देश द्रोह का मुदकमा चला और उसका मुकदमा पंडित जवाहर लाल नेहरू और उनके साथी वकील ने न सिर्फ लड़ा, बल्कि उसे बरी भी कराया, उस आज़ादी के मतवाले का नाम था जनरल शाहनवाज़ खान, जो सुभाष चन्द्र बोस के अभिन्न साथी थे।

माननीय उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय से कहना चाहता हूं कि वह कम से कम इन किरदारों को तो पाठ्यक्रम में शामिल

कर ले। पूर्व में उपरोक्त चरित्रों पर आधारित अध्याय पाठ्यक्रमों में शामिल थे, परन्तु पता नहीं ये क्यों निकाल दिए गए।

मैं पुन: जंग-ए-आज़ादी के इन मुस्लिम किरदारों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की पुरजोर मांग करता हूं।

†[**چودھری منوّر سلیم (اتّر پردیش):** مانّنے اپ سبھاپتی مہودے، ہمارے دیش کی سندرتا یہی ہے کہ اس کے نرمان میں ہمارے سبھی دھرموں، بھاشاؤں اور پرانتوں کا یوگدان رہا ہے۔ اسی پرکار بھارت کی جنگ آزادی کا بھی اتہاس رہا ہے، جس کو پڑھنے کے بعد پوری دنیا ہم ہندوستانیوں کی محبت، بھائی چارے اور راشٹر پریم کو دیکھ کر ایرشیا بھی کرتی ہے اور سیکھتی بھی ہے۔ میں بھارت کی جنگ آزادی کے کچھ ایسے چرتروں کا الیکھ کرنا چاہتا ہوں، جنہیں پڑھ کر آنے والی نسلوں میں راشٹرواد اور سدبھاونا کا ورکش بلوان ہوگا۔

میں حکومت ہند سے کہنا چاہتا ہوں کہ بھارتی سوتنترتا سنگرام میں اپنی جان نچھاور کرنے والے 'محمد علی جوہر' تھے، جن کا اعلان تھا کہ "گول میز کانفرنس سے یا تو ملک آزاد کراکر لوٹونگا یا پھر وہیں جان دے دونگا" اور آخر کار انہوں نے وہیں گول میز پر ہی اپنی جان دے دی۔ ان کے بھائی 'محمد شوکت علی جوہر' نے سخت جیل کاٹی، ان کی ماں 'بی-امّاں' کے ہاتھ کی سلی ٹوپی مہاتما گاندھی جی نے اپنے سر پر لگائی اور آج تک وہ 'گاندھی کیپ' کہلاتی ہے۔ اسی پرکار برکت اللہ بھوپالی تھے، جنہوں نے انترم سرکار کے پردھان منتری کے روپ میں برطانوی سلطنت کے ماننے سے انکار کرتے ہوئے ہندوستانیوں کو فرنگیوں کے خلاف جہاد پر آمادہ کیا تھا۔ اسی پرکار وہ پہلا ہندوستانی، جس نے فرنگیوں کے سینے پر پیر رکھ کر لال قلعے کی دیوار پر ترنگا لہرایا، وہ کون تھا؟ جس پر انگریزی حکومت میں دیش-دروہ کا مقدمہ چلا اور اس کا مقدمہ پنڈت جواہر لال نہرو اور ان کے ساتھی وکیل نے نہ صرف لڑا، بلکہ اسے بری بھی کرایا، اس آزادی کے متوالے کا نام تھا 'جنرل شاہنواز خان'، جو سبھاش چندر بوش کے ابھنّ ساتھی تھے۔

مانّنے اپ سبھا پتی مہودے، میں آپ کے مادھیم سے بھارت سرکار کے مانو-سنسادھن منترالیہ سے کہنا چاہتا ہوں ک وہ کم سے کم ان کرداروں کو تو پاٹھئے-کرم میں شامل کر لے۔ پہلے اپ-روکت چرتروں پر آدھارت ادھیائے پاٹھئے-کرموں میں شامل تھے، لیکن پتہ نہیں یہ کیوں نکال دئے گئے۔

میں پھر سے جنگ آزادی کے ان مسلم کرداروں کو پاٹھئے-کرم میں شامل کرنے کی پرزور مانگ کرتا ہوں۔]

†Transliteration in Urdu script.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Mansukh L. Mandaviya is not present; Shri C.M. Ramesh, not laying on the Table; Shri Ram Vilas Paswan is not there.

Demand to withdraw the decision of closing of regional office of Coal India Ltd. in Patna

श्री राम कृपाल यादव (बिहार): महोदय, कोल इंडिया प्रबंधन बिहार स्थित अपने एकमात्र क्षेत्रीय विक्रय कार्यालय, पटना को बन्द करने का प्रयास कर रहा है। जैसा कि आप जानते हैं, बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की बात हो रही है, वहीं सीआईएल के क्षेत्रीय विक्रय कार्यालय, पटना को बन्द कर बिहार की प्रगति में बाधा उत्पन्न की जा रही है। इसको बन्द करने के पक्ष में यह तर्क दिया जा रहा है कि यहां पर कोई कार्य नहीं बचा है, परन्तु हकीकत यह है कि बिहार में बरौनी थर्मल और कांटी थर्मल को कोयला आपूर्ति की मॉनिटरिंग पटना ऑफिस कर रहा है। बाढ़ थर्मल भी इस वर्ष के अंत तक शुरू हो जाएगा। साथ ही, बिहार के कोयला उपभोक्ताओं की जरूरत को भी पटना ऑफिस से ही संचालित किया जा रहा है। इतना ही नहीं, ईस्ट-सेन्ट्रल रेलवे का जोनल मुख्यालय भी हाजीपुर में है, जो सिंगरौली, रांची एवं धनबाद के कोयले के रैक परिचालन को नियंत्रित करता है। इसमें पटना ऑफिस की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक तरफ यह अति महत्वपूर्ण पटना कार्यालय को बन्द करना चाहता है, वहीं दूसरी तरफ कोलकाता में मुख्यालय होने के बावजूद कोल इंडिया एवं अनुषंगी कम्पनियों ने कोलकाता में ही 14 अन्य ऑफिसेज़ खोल रखे हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं है। सीआईएल ने दानकुनी, कोलकाता में ही एक अलग कोल कॉम्प्लेक्स खोल रखा है, जिसमें 266 सुपरवाइजर एवं अधिकारी तथा 233 मजदूर केवल कागज़ पर कार्यरत हैं। यहां वर्षों से कार्य और उत्पादन बन्द है। फिर भी इनको बन्द करने की बजाय पटना कार्यालय को बन्द किया जा रहा है। बिहार जैसे अति पिछड़े राज्य के क्षेत्रीय कार्यालय को बन्द करना राज्य विरोधी, अव्यावहारिक तथा प्रबंधन की मनमानी सोच है।

अत: मेरा सरकार से अनुरोध है कि वह इस विषय को संज्ञान में लेकर सीआईएल को आदेश दे कि वह पटना स्थित कार्यालय को बन्द करने का प्रयास न करे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Parshottam Khodabhai Rupala has not laid.

Demand to address the plight of Buddhist community of Zanskar suffering from discrimination meted out by the Police and administration

SHRI TARUN VIJAY (Uttarakhand): Sir, recently, Buddhists in Zanskar were subjected to a tyrannical assault. Some anti-social communal elements beat up the Buddhists, entered their houses, ransacked dozens of them and dragged innocent women, children and monks out of their houses in Padum and the adjoining areas in